मुद्रा-स्फीति अथवा मुद्रा-प्रसार

'Inflation' का शाब्दिक अर्थ '**स्फीति**' है, परन्तु व्यवहार में इसे '**मुद्रा-स्फीति**' अथवा '**मुद्रा-प्रसार**' कहा जाने लगा है। इसका मुख्य कारण यह है कि इससे सम्बन्धित स्थिति, जिसमें मुद्रा का मूल्य गिरता है, मुख्यतया मुद्रा-प्रसार का ही परिणाम मानी जाती है। पहले मुद्रा-प्रसार का अर्थ यह समझा जाता था कि मुद्रा की मात्रा का विस्तार उसके पीछे रखे जाने वाले सुरक्षित कोष के अनुपात से अधिक हो गया है, परन्तु बाद में इसका प्रयोग उस स्थिति के लिए किया जाने लगा जबकि मुद्रा की मात्रा वस्तुओं तथा सेवाओं की मात्रा से अधिक हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रा का मूल्य गिरने लगता है अर्थात् कीमतों में वृद्धि होने लगती है। आधुनिक काल में केन्स तथा उसके समर्थकों ने स्फीति को रोजगार तथा आय की स्थिति से सम्बन्धित किया है। मुद्रा-स्फीति की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

क्राउथर (Crowther) के विचार में, "**मुद्रा-स्फीति वह स्थिति है जिसमें मुद्रा-मूल्य गिरता है अर्थात् कीमतें बढ़ती हैं।.....मुद्रा-स्फीति को प्रायः बढ़ती हुई क्रियाशीलता तथा रोजगार से सम्बन्धित किया जाता है।**"[1] इसमें सन्देह नहीं कि यह परिभाषा अति सरल है, परन्तु यह सही स्थिति को व्यक्त नहीं करती। वास्तव में, मुद्रा की मात्रा में प्रत्येक वृद्धि तथा उसके परिणामस्वरूप कीमतों में होने वाली वृद्धि मुद्रा-स्फीति नहीं कहलायेगी। उदाहरणार्थ, मन्दी-काल में मुद्रा की मात्रा में किया गया विस्तार तथा कीमतों का चढ़ाव मुद्रा-स्फीति नहीं कहा जायेगा, क्योंकि यह अर्थ-व्यवस्था के लिए हानिकारक नहीं अपितु हितकर होता है। इसी प्रकार, रोजगार की स्थिति में प्रत्येक सुधार को मुद्रा-स्फीति से सम्बन्धित करना अनुचित होगा।

केमरर (Kemmerer) के अनुसार, "**मुद्रा-स्फीति वह स्थिति है जिसमें किये जा रहे व्यापार की तुलना में चलन में मुद्रा की मात्रा अधिक होती है।**"[2] इस प्रकार केमरर उस स्थिति को मुद्रा-प्रसार समझता है जब

1 Crowther : *An Outline of Money*, p. 107.
2 E. W. Kemmerer : *A. B. C. of Inflation*, p. 6.

Scanned with CamScanner

देश में व्यापार की मात्रा के रूप में प्रकट की जाने वाली मुद्रा की माँग की अपेक्षा मुद्रा की पूर्ति अधिक होती है। जैसा कि केमरर ने एक अन्य स्थान पर लिखा है, यह आवश्यक नहीं कि मुद्रा-स्फीति की स्थिति मुद्रा की मात्रा बढ़ने पर ही उत्पन्न हो। मुद्रा की मात्रा स्थिर रहने पर भी व्यापार की मात्रा में कमी हो सकती है, जिसके फलस्वरूप कीमतें बढ़ने लगेंगी और मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी।

जैसा कि क्राउथर द्वारा दी गयी परिभाषा के सम्बन्ध में कहा गया है, यह आवश्यक नहीं कि मुद्रा की मात्रा में प्रत्येक वृद्धि मुद्रा-स्फीति ही हो, कभी-कभी यह वृद्धि मन्दी के पश्चात् आर्थिक उत्थान के लिए भी की जा सकती है। इसके अतिरिक्त केमरर की परिभाषा कुछ अस्पष्ट भी है, क्योंकि इससे हमें यह पता नहीं चलता कि हम व्यापार तथा व्यवसाय की मौद्रिक आवश्यकताओं को कैसे निर्धारित करें। प्राय : कीमतें बढ़ने पर यह कहा जा सकता है कि मुद्रा की पूर्ति मुद्रा की माँग से अधिक है। परन्तु ऐसा कहना ठीक नहीं है, क्योंकि हो सकता है कि कीमतों में वृद्धि किसी अमौद्रिक कारण से हुई हो। इस प्रकार एक ओर तो मुद्रा की माँग का सही अनुमान लगाना कठिन होता है, दूसरी ओर मुद्रा की पूर्ति का अनुमान लगाना भी कठिन है, क्योंकि चलन की मात्रा के साथ-साथ चलन-गति (velocity) भी पूर्ति को प्रभावित करती है। अतएव मुद्रा की माँग तथा पूर्ति के आधार पर केमरर द्वारा दी गयी मुद्रा-स्फीति की परिभाषा को सन्तोषजनक नहीं कहा जा सकता।

हॉट्रे (Hawtrey) के अनुसार, **"आर्थिक जीवन की वह दशा जिसमें चलन का अत्यधिक निर्गमन हो, मुद्रा-स्फीति है।"** केमरर की परिभाषा के समान यह भी अस्पष्ट है, क्योंकि 'अत्यधिक निर्गमन' से अभिप्राय स्पष्ट नहीं है। यदि इसका निर्धारण मुद्रा की माँग के आधार पर करना है तो इसकी कठिनाइयों का उल्लेख हम केमरर की परिभाषा की आलोचना करते समय कर चुके हैं।

पीगू (Pigou) ने मुद्रा-स्फीति की परिभाषा में एक अलग दृष्टिकोण अपनाया है। उनके विचार में, **मुद्रा-स्फीति की स्थिति तब होती है जब मौद्रिक आय उत्पादन की तुलना में अधिक बढ़ रही हो।** उन्होंने लिखा है कि "मुद्रा-स्फीति उस समय होती है जब उत्पादक-साधनों को भुगतान के रूप में प्राप्त होने वाली मौद्रिक आय उनके द्वारा किये गये उत्पादन-कार्य की तुलना में तेजी से बढ़ रही होती है।"[1] इस प्रकार, प्रो. पीगू के अनुसार मुद्रा-स्फीति की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब देश में वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि की तुलना में लोगों की मौद्रिक आय अधिक बढ़ जाती है। मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि होने पर मौद्रिक आय बढ़ती है जिसके परिणामस्वरूप उपभोग की वस्तुओं और सेवाओं की माँग बढ़ती है तथा उत्पादन को प्रोत्साहन मिलता है। धीरे-धीरे उत्पादन की वृद्धि तथा मौद्रिक आय की वृद्धि में साम्य (equilibrium) स्थापित हो जाता है। इस बिन्दु के आगे मौद्रिक आय में वृद्धि होने पर उत्पादन में वृद्धि नहीं होती, बल्कि वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतों में वृद्धि होने लगती है। **यही असन्तुलन की स्थिति, जबकि मौद्रिक आय की वृद्धि उत्पादन की वृद्धि से अधिक होती है, मुद्रा-स्फीति की स्थिति होती है।**

यह स्पष्ट है कि पीगू के अनुसार कीमतों की प्रत्येक वृद्धि मुद्रा-स्फीति नहीं है। उनके अनुसार पाँच दशाओं में कीमतों की वृद्धि मुद्रा-स्फीति की श्रेणी में आती है : (1) मौद्रिक आय में वृद्धि हो रही हो जबकि उत्पादन की मात्रा स्थिर हो; (2) मौद्रिक आय में वृद्धि हो रही हो जबकि राष्ट्रीय उत्पादन की मात्रा घट रही हो; (3) मौद्रिक आय में वृद्धि इतनी तीव्र हो कि उसका अनुपात उत्पादन की वृद्धि से अधिक हो; (4) मौद्रिक आय यथास्थिर हो परन्तु राष्ट्रीय उत्पादन घट रहा हो; तथा (5) मौद्रिक आय घट रही हो और साथ में उत्पादन में भी कमी हो रही हो। इस प्रकार, **प्रो. पीगू की मुद्रा-स्फीति की धारणा उत्पादन के साथ जुड़ी हुई है जिससे यह अन्य बतायी गयी सभी परिभाषाओं से अधिक व्यावहारिक तथा उपयुक्त है।**

वास्तविकता यह है कि **मुद्रा-स्फीति से अभिप्राय बढ़ती हुई कीमतों के क्रम से है, न कि बढ़ी हुई कीमतों की स्थिति से।** यह ऐसे आर्थिक असन्तुलन को व्यक्त करती है जिसके अन्तर्गत कीमतें निरन्तर बढ़ रही होती हैं। **मिल्टन फ्रिडमैन** (Milton Friedman) के अनुसार मुद्रा-स्फीति से अभिप्राय **"कीमतों में सुस्थिर एवं अविरत रूप से होने वाली वृद्धि"** (a steady and sustained rise in prices) से है।[2]

---

1 "Inflation is taking place when money income is expanding relatively to the output of work by productive agents for which it is the payment." —Pigou : *The Veil of Money*, p. 34.

2 Milton Friedman : *Inflation—Causes and Consequences*, p.1.

Scanned with CamScanner

मुद्रा-स्फीति के रूप

मुद्रा-स्फीति कई प्रकार की होती है। इसके विभिन्न रूपों के वर्गीकरण के कई आधार हैं—

(1) **कारणों के अनुसार**—मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न होने के कारणों के आधार पर मुद्रा-स्फीति के अनेक रूप हो सकते हैं। यदि कीमत-स्तर में वृद्धि वस्तुओं की पूर्ति में कमी के कारण होती है, तो उस स्थिति को '**वस्तु-स्फीति**' (Commodity Inflation) कहते हैं। यदि कीमतों में वृद्धि चलन में मुद्रा की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाने के कारण होती है, तो उसे '**साख-स्फीति**' (Currency Inflation) कहा जाता है। स्फीति का मुख्य कारण साख की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि होने पर '**साख-स्फीति**' (Credit Inflation) की स्थिति उत्पन्न होती है। करों में वृद्धि तथा अन्य वित्तीय कारणों से स्फीति उत्पन्न होने पर उसे '**वित्तीय-स्फीति**' (Fiscal or Budgetary Inflation) कहा जाता है। इसी प्रकार **अति-विनियोग स्फीति** (Over-Investment Inflation), **अल्प-उत्पादन स्फीति** (Under-production Inflation) आदि अन्य अनेक रूप होते हैं।

कारणों के आधार पर **माँग-प्रेरित स्फीति** (Demand-pull Inflation) तथा **लागत-प्रेरित स्फीति** (Cost-push Inflation) में भेद किया जाता है।

उन क्रियाओं के आधार पर जिनके द्वारा स्फीति उत्पन्न होती है, स्फीति के तीन रूप हो सकते हैं—

1. **घाटा-प्रेरित स्फीति** (Deficit-induced Inflation)—सरकार का व्यय अपनी आय से अधिक होने पर जब घाटे की पूर्ति हीनार्थ-प्रबन्धन (deficit financing) द्वारा की जाती है तो चलन में मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होती है तथा मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है।

Scanned with CamScanner

2. **वेतन-प्रेरित स्फीति** (Wage-induced Inflation) वह स्थिति है जबकि मजदूरी में वृद्धि का अनुपात श्रम की उत्पादकता में वृद्धि से अधिक है जिसके कारण उत्पादन लागत एवं कीमत-स्तर से वृद्धि होती है।

3. **लाभ-प्रेरित स्फीति** (Profit-induced Inflation) के अन्तर्गत उत्पादन-लागत में कमी होने पर कीमतों को नीचे गिरने से जब कृत्रिम उपायों द्वारा रोका जाता है तो उत्पादकों के लाभ में वृद्धि होती है। कीमतें बढ़ती तो नहीं परन्तु नीचे भी नहीं आ पाती हैं। इस प्रकार की स्थिति को केन्स ने लाभ-प्रेरित स्फीति कहा है।

(2) **समय के अनुसार**—समय के अनुसार मुद्रा-स्फीति का वर्गीकरण **युद्ध-कालीन स्फीति** (War-period Inflation), **युद्ध-पश्चात् स्फीति** (Post-war Inflation) तथा **शान्ति-कालीन स्फीति** (Peace-time Inflation) में किया जाता है। युद्ध-काल में मुद्रा की मात्रा में वृद्धि, उत्पादन के ढाँचे में परिवर्तन तथा विदेशी व्यापार की समस्याओं के कारण मुद्रा-स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है, जो युद्ध-काल में भी बनी रहती है। शान्ति-काल में अधिक विकास के कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए अथवा किसी अन्य उद्देश्य से मुद्रा की मात्रा में वृद्धि करने पर भी मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

(3) **आकार के अनुसार**—आकार के आधार पर मुद्रा-स्फीति 'व्यापक स्फीति' (Comprehensive Inflation) अथवा 'खण्डीय स्फीति' (Sectional Inflation) हो सकती है। जब सभी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हो तो व्यापक स्फीति होती है और जब कुछ विशेष वस्तुओं की कीमतों में ही वृद्धि हो तो खण्डीय स्फीति की स्थिति होती है। खण्डीय स्फीति की स्थिति प्रायः अस्थायी प्रकार की होती है।

(4) **नियन्त्रण के अनुसार**—मुद्रा-स्फीति का वर्गीकरण **'खुली-स्फीति'** (Open Inflation) तथा **'दबी-स्फीति'** (Suppressed Inflation) में भी किया जाता है। कीमतों की वृद्धि पर किसी प्रकार का नियन्त्रण न होने से जब उनमें स्वतन्त्र रूप से वृद्धि होती है तो ऐसी स्थिति को 'खुली स्फीति' कहते हैं। 'दबी स्फीति' से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें सरकार द्वारा कीमत-नियन्त्रण (price control) तथा राशनिंग की नीतियों द्वारा कीमतों को नियन्त्रित रखने का प्रयास किया जाता है। पूर्ति की मात्रा को नियन्त्रित करके सरकार मुद्रा की मात्रा में होने वाली वृद्धि को प्रभावहीन बना देती है। व्यावहारिक रूप में नियन्त्रण पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाते तथा कीमतों कुछ वृद्धि हो जाती है, परन्तु यह वृद्धि उस वृद्धि की अपेक्षा बहुत कम होती है जो नियन्त्रित न रहने की स्थिति में होती है।

(5) **गति के अनुसार**—मुद्रा-स्फीति की गति (speed) के आधार पर इसके चार रूप होते हैं—

1. **रेंगती स्फीति** (Creeping Inflation)—यह उस स्थिति की सूचक है जबकि कीमत-स्तर में धीरे-धीरे वृद्धि होती है। केन्स के विचार में इस प्रकार की हल्की-सी मुद्रा-स्फीति अर्थ-व्यवस्था को विकासोन्मुख रखने के लिए आवश्यक है। परन्तु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यह रेंगती हुई स्फीति बाद में कहीं चलना, कूदना तथा दौड़ना आरम्भ न कर दे।

2. **चलती-स्फीति** (Walking Inflat- ion)—रेंगती स्फीति की गति कुछ बढ़ जाने पर जब कुछ खतरे के चिह्न दिखायी पड़ने लगें तो यह चलती स्फीति की स्थिति होती है।

3. **दौड़ती स्फीति** (Running Inflat-ion)—इस स्थिति के अन्तर्गत कीमतों में तेजी से वृद्धि होने से स्थिर आय वाले लोगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

4. **सरपट दौड़ती स्फीति** (Galloping Run-way or Hyper-Inflation)—यह वह स्थिति होती है जिसमें कीमतें इतनी तीव्रता से बढ़ती हैं कि वृद्धि की कोई सीमा ही नहीं होती, और न ही इसके बारे में अनुमान लगाना सम्भव होता है। मुद्रा का मूल्य इतना अधिक गिर जाता है कि लोगों का मुद्रा में विश्वास नहीं रहता। प्रथम युद्ध के पश्चात् जर्मनी तथा आस्ट्रेलिया में इसी

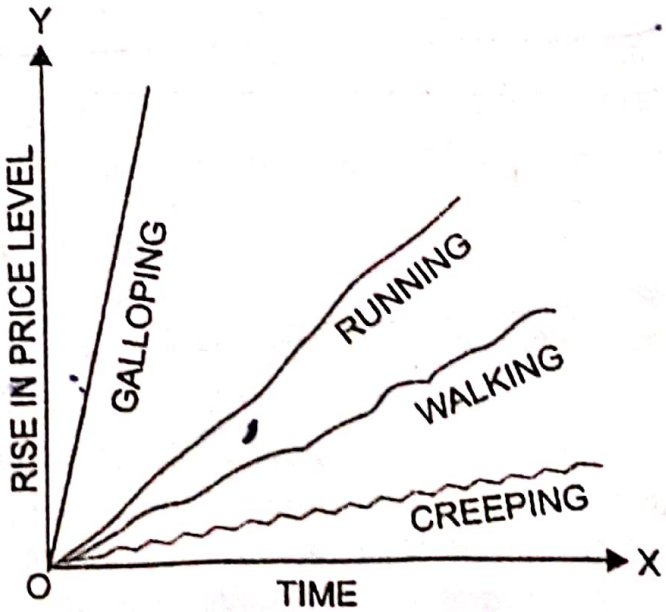

रेखाचित्र 10.2

Scanned with CamScanner

प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी जबकि एक दिन में कई बार थोड़ी-थोड़ी देर के बाद कीमतों में परिवर्तन होते थे। एक ही समय में चाय पीने पर पहले प्याले की कीमत दूसरे प्याले की कीमत से भिन्न हो जाती थी। इन परिस्थितियों में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था अस्त-व्यस्त होती जाती है।

उपर्युक्त चारों स्थितियाँ उपर्युक्त रेखाचित्र (10·2) द्वारा दिखायी गयी हैं। जैसा कि चित्र से स्पष्ट है, रेंगती स्फीति की गति धीमी होती है; परन्तु उसके बाद की स्थितियों में क्रमशः बढ़ती जाती है; जबकि सरपट दौड़ती स्फीति की तो कोई सीमा ही नहीं रहती। साधारण रूप में कीमत स्तर के लगभग 2 अथवा 3 प्रतिशत के करीब वार्षिक वृद्धि-दर रेंगती स्फीति की सूचक होती है। 2-3 प्रतिशत से 10 प्रतिशत के बीच वार्षिक वृद्धि चलती स्फीति तथा 10 प्रतिशत वार्षिक से अधिक दौड़ती स्फीति की स्थिति कही जा सकती है। सरपट दौड़ती स्फीति में तो एक वर्ष में अनिश्चित रूप में कितनी भी वृद्धि हो सकती है। अस्थिरता इतनी अधिक बढ़ जाती है कि कोई भी अनुमान लगाना सम्भव नहीं होता। इस प्रकार स्फीति अपनी लपटों में स्वयं ईंधन डालती है। (It adds fuel to its own flames).

मुद्रा-स्फीति के उपर्युक्त विभिन्न रूपों के अतिरिक्त वर्गीकरण के कुछ अन्य आधार भी हैं, जैसे समय की अवधि के आधार पर वर्गीकरण अल्पावधि (short-period) स्फीति, दीर्घावधि (long period) स्फीति तथा चिरकालीन (secular) स्फीति में किया जा सकता है। रोजगार की स्थिति के आधार पर, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, स्फीति का वर्गीकरण पूर्ण-स्फीति (final inflation) तथा अर्द्ध-स्फीति (semi-inflation) में किया जाता है। इस प्रकार मुद्रा-स्फीति के रूप इसके वेग, समय, आकार अथवा कारण इत्यादि के अनुसार अलग-अलग होते हैं।

मुद्रा-स्फीति की जाँच

यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि **कीमत-स्तर में होने वाली प्रत्येक वृद्धि को मुद्रा-स्फीति नहीं कहा जा सकता**। मन्दी की स्थिति में जब कीमत-स्तर असाधारण रूप से गिर जाता है, मुद्रा की मात्रा में वृद्धि करने से यदि कीमत-स्तर में कुछ वृद्धि होती है, तो उसे मुद्रा-स्फीति नहीं कहा जायेगा। जैसा कि पहले बताया गया है, केन्स के अनुसार मुद्रा-स्फीति की स्थिति पूर्ण-रोजगार के बिन्दु के उपरान्त उत्पन्न होती है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण यह है कि मुद्रा-स्फीति को रोजगार की स्थिति के साथ सम्बन्धित नहीं किया जाता। **कीमत-स्तर में होने वाली क्रमिक तथा निरन्तर वृद्धि को ही मुद्रा-स्फीति का सूचक माना जाता है। यह एक प्रावैगिक प्रक्रिया है जो लम्बे समय तक क्रियाशील रहती है।**

मुद्रा-स्फीति एक **आर्थिक असन्तुलन** की स्थिति है जिसमें वस्तुओं तथा सेवाओं की माँग उनकी उपलब्ध पूर्ति से अधिक होती है। अतिरिक्त माँग का प्रमुख कारण मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि होना समझा जाता है। वास्तव में मुद्रा की पूर्ति में प्रत्येक वृद्धि का प्रभाव स्फीतिक नहीं होता, परन्तु कीमतों में निरन्तर वृद्धि की स्थिति तभी तक बनी रह सकती है जब तक मुद्रा की पूर्ति बढ़ती रहती है।

मुद्रा-स्फीति का क्रम एक बार आरम्भ होने पर बढ़ता ही जाता है। इससे अर्थ-व्यवस्था के सभी पहलू प्रभावित होते हैं। कीमतों में वृद्धि के कारण व्यय की मात्रा बढ़ने लगती है तथा बचत की मात्रा कम हो जाती है। व्यापारी भी भविष्य में अधिक लाभ की आशा से वस्तुओं की माँग बढ़ा देते हैं। अधिक व्यय के परिणामस्वरूप वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल माँग में वृद्धि हो जाती है जिसका प्रभाव कीमतों, वेतनों, उत्पादन-लागत इत्यादि पर वृद्धि के रूप में पड़ता है। उत्पादन की मात्रा में इसी अनुपात में वृद्धि न होने पर मुद्रा के मूल्य में निरन्तर कमी होने लगती है। इन परिस्थितियों में यदि मुद्रा की मात्रा में और वृद्धि कर दी जाय तो भयंकर स्थिति उत्पन्न हो सकती है। मुद्रा-स्फीति के क्रम में रुकावट न डालने पर एक अवस्था ऐसी आती है जबकि अतिस्फीति (hyper-inflation) अथवा तीव्रगामी स्फीति (galloping inflation) की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

Scanned with CamScanner